ज़ार्ज इवानोविच गुर्ज़िएफ़

ज़ार्ज इवानोविच गुर्ज़िएफ़ का जन्म फ़ारस (वर्तमान ईरान) से सटे रूस के दक्षिणी ट्रान्सकॉकेशियन क्षेत्र में स्थित अलेक्सांद्रोपोल में हुआ था। उनकी जन्म-तिथि एवं साल के विषय में मतभेद है। गुर्ज़िएफ़ ने कभी इसको स्पष्ट नहीं किया, लिहाजा इंटरनेट पर सन् 1866 ई. से लेकर सन् 1877 ई. के बीच उनके जन्म का उल्लेख पाया जाता है। उनके पिता ग्रीक (यूनानी) तथा मां आर्मेनियन थीं। उनकी प्रारंभिक शिक्षा कार्स में हुई, जहां उन्हें पादरी एवं फिजिशियन के रूप में प्रशिक्षण मिला। रहस्यवाद के प्रति उनका रुझान कम उम्र में ही उन्हें घुमक्कड़ी की ओर खींच ले गया। गुर्ज़िएफ़ का प्रारंभिक जीवन रहस्य के आवरण में ढका है और जो कुछ जानकारी उपलब्ध है, उसका एकमात्र स्रोत उनकी आत्मकथात्मक पुस्तक 'मीटिंग्स विथ रिमार्केबल मेन' है।

इस पुस्तक में उन्होंने अपने दो दशक की खोज-यात्रा का विवरण दिया है। इस कार्य में उनके साथ अन्य लोग भी थे, जिन्हें वास्तविक सत्य की तलाश थी। यह तलाश इन 'सत्यशोधकों' को मध्य एशिया, मध्य पूर्व, तिब्बत एवं हिंदूकुश के पर्वतों में ले गयी। हालांकि गुर्ज़िएफ़ ने अपने भारत-प्रवास का बस उड़ता-सा ज़िक्र किया है, मगर उनके व्याख्यानों से लगता है कि काफी दिनों तक वे भारत में भी रहे थे।

तलाश की समाप्ति के बाद 1912 में वे मॉस्को में अपने इस 'नये ज्ञान' के साथ प्रकट हुए और एक खास किस्म के बुद्धिजीवी वर्ग को उन्होंने अपनी धारणाओं की शिक्षा देनी शुरू की। 1912 में ही उनका विवाह लेना कैवेलियरी के साथ हुआ। 1915 के प्रारंभ में उनकी मुलाकात पी.डी. ऑस्पेन्स्की से हुई और उसके बाद से उनके जीवन, उनकी साधना, एवं शिक्षा-पद्धति का वर्णन ऑस्पेन्स्की की पुस्तक 'इन सर्च ऑफ दि मिरैक्यूलस' में अंकित है।

1922 ई. में उन्होंने पेरिस के पास फॉन्टेनब्ल्यू में 'इंस्टिट्यूट फॉर दि हार्मोनियस डेवलपमेंट ऑफ मैन' खोला और दो वर्षों तक यहां 'साधना' का अत्यंत सक्रिय दौर चला। इसमें उनका ज्यादा जोर संगीत, नृत्य, चेष्टाओं तथा आत्म-अवलोकन पर था। दिसंबर, 1923 में उन्होंने पेरिस के थिएटर द चैम्प

एलिसी में इनका एक भव्य प्रदर्शन भी आयोजित किया। इसके तुरंत बाद जनवरी, 1924 में वे अपनी शिक्षाओं के प्रसार के लिए अमेरिका चले गए।

अमेरिका से लौटने के बाद एक दिन पेरिस से प्रीयुरे लौटते वक्त उनकी कार गंभीर रूप से दुर्घटनाग्रस्त हो गयी। 6 जुलाई 1924 को हुई इस दुर्घटना ने प्रीयुरे में चल रही गतिविधियों पर विराम लगा दिया। दुर्घटना से उबरने के बाद उन्होंने पाया कि उनके कई शिष्य एवं मित्र उन्हें छोड़ कर चले गये थे। यूरोप की भाषा एवं संस्कृति से अपरिचित उन्होंने स्वयं को अकेला पाया। स्वास्थ्य दुर्बल हो चुका था, इसलिए 1 जनवरी, 1925 से उन्होंने अपने विचारों को तीन पुस्तकों की एक शृंखला में डिक्टेट करना शुरू किया। उनके लेखन का दौर 1925 से 1935 तक चला। इस दौरान '*आल ऐंड एवरीथिंग*' शीर्षक के तहत उन्होंने '*बीलजेबब्स टेल्स टु हिज ग्रैंडसन*' '*मीटिंग्स विथ रिमार्केबल मेन,*' एवं '*लाइफ इज रियल ओन्ली देन, ह्वेन आई एम*' की रचना की।

1932 में गुर्ज़िएफ़ प्रीयुरे छोड़कर पेरिस में बस गये। 29 अक्तूबर, 1949 को यहीं उन्होंने अंतिम सांस लिया। उपर्युक्त पुस्तकों के अलावा गुर्ज़िएफ़ ने थॉमस द हार्टमैन के साथ मिलकर 200 संगीत रचनाओं को भी संयोजित किया। उनके प्रमुख शिष्यों में उस समय के कई बुद्धिजीवी, लेखक, मनोवैज्ञानिक एवं चिकित्सक थे।

❐❐

पी.डी. ऑस्पेन्स्की

प्योत्र दिमाइनोविच ऑस्पेन्स्की का जन्म 4 मार्च, 1878 को मॉस्को में हुआ था। उनकी मां एक चित्रकार थीं तथा पिता रेलवे में उच्चाधिकारी होते हुए भी संगीत-प्रेमी थे। अल्प आयु में ही बौद्धिक परिपक्वता के कारण अकादमिक डिग्रियों में उनकी रुचि नहीं थी और उन्होंने स्कूल छोड़ दिया तथा अपना अधिकांश समय यात्रा एवं पत्रकारिता में बिताने लगे।

उनकी पहली पुस्तक 'चतुर्थ आयाम' *(फोर्थ डायमेंशन)* 1909 तथा *'टर्शियम ऑर्गेनम'* 1912 में रूसी भाषा में प्रकाशित हुई। 1914 में रूसी भाषा में प्रकाशित उनके लेखों के संग्रह 'ए न्यू मॉडल ऑफ दि यूनिवर्स' ने 'रहस्यवाद' में उनकी रुचि की ओर संकेत किया। इन पुस्तकों के कारण ऑस्पेन्स्की की ख्याति एक गंभीर चिंतक एवं दार्शनिक के रूप में स्थापित हो चुकी थी। 1915 में भारत-यात्रा से लौटने के पश्चात मॉस्को में जी. आई. गुर्ज़िएफ़ से उनकी मुलाकात उनके जीवन में एक निर्णायक मोड़ साबित हुई। उसके बाद से उनके कार्य का गुरुत्व-केंद्र मनुष्य में चेतना के विकास की व्यावहारिक विधियों के अध्ययन पर केंद्रित हो गया। आठ साल तक गुर्ज़िएफ़ के साथ कार्य करने के उपरांत उनकी पद्धति को ऑस्पेन्स्की ने *'इन सर्च ऑफ दि मिरैक्यूलस : फ्रैगमेण्ट्स ऑफ ऐन अननोन टीचिंग्स'* में कलमबद्ध किया, जो 1949 में उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुई।

अंग्रेजी में *'टर्शियम ऑर्गेनम'* 1920 में तथा *'ए न्यू मॉडल... '* का 1931 में प्रकाशन हुआ। *'टर्शियम ऑर्गेनम'* कुछ ही दिनों में अमेरिका की न सिर्फ 'सर्वाधिक बिक्रीवाली' पुस्तक बन गई, बल्कि उसने ऑस्पेन्स्की को विश्व भर में ख्याति दी। पर ऑस्पेन्स्की को मुख्यत: 'इन सर्च ऑफ दि मिरैक्यूलस' के लिए ही विश्व भर में याद किया जाएगा। कई भाषाओं में इसके अनुवाद हो चुके हैं और गुर्ज़िएफ़ की शिक्षाओं का यह अत्यंत प्रामाणिक ग्रंथ है। कहा जा सकता है कि जो भूमिका प्लेटो ने सुकरात की शिक्षाओं के प्रसार में तथा स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण परमहंस की शिक्षाओं के प्रसार में अदा की, वही भूमिका ऑस्पेन्स्की की यह किताब गुर्ज़िएफ़ की शिक्षाओं के लिए करती है।

इनके अलावा ऑस्पेन्स्की की अन्य प्रकाशित पुस्तकों में 'फोर्थ वे', 'दि साइकोलॉजी ऑफ मेन्स पॉसिबल इवोल्यूशन', 'टाक्स विथ ए डेविल' महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने एक लघु उपन्यास 'स्ट्रेंज लाइफ ऑफ ईवान ओशोकिन' भी लिखा है। ये सभी पुस्तकें उनके निधन के पश्चात ही प्रकाशित हुईं।

सन् 1923 में गुर्ज़िएफ़ से अलग होने के बाद ऑस्पेन्स्की ने लंदन में अपना ठिकाना बनाया और 'फोर्थ वे' (चतुर्थ मार्ग) पद्धति की स्वतंत्र रूप से शिक्षा देने लगे। गुर्ज़िएफ से उनकी आखिरी मुलाकात 1930 में हुई। उनकी शिक्षा का तरीका यह था कि जो 'नये लोग' आते थे, उन्हें उनके पांच या छह लिखित अभिभाषणों को पढ़कर सुनाया जाता था। फिर ऑस्पेन्स्की उनके प्रश्नों का उत्तर देते थे। जो शिष्य व्यावहारिक प्रशिक्षण लेना चाहते थे, उनके लिए न्यू जर्सी में उनके घर पर उनकी पत्नी सोफिया ऑस्पेन्स्की व्यावहारिक प्रशिक्षण की व्यवस्था संभालती थीं।

द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू होने के पश्चात 1940 में ऑस्पेन्स्की अपने कुछ शिष्यों के साथ अमेरिका चले गए। वहां भी उनका कार्य यथावत् चलता रहा। 1947 में वे पुनः लंदन वापस आ गये, अपने पुराने शिष्यों से मिलने, जो उनका बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। यहां उन्होंने कुल छह गोष्ठियों में भाग लिया, जिनमें 300 लोग शरीक हुए। अक्टूबर, 1947 में लंदन में ही उन्होंने अपने पार्थिव शरीर का त्याग किया।

❐❐